Dr. Kumari Priyanka
H.D Jain college Ara
History department

Notes for B.A. part 2

राजपूतों की उत्पत्ति के प्रश्न भारत के इतिहास की आज भी एक गूढ़ पहेली है अभी तक इतिहासकारों के बीच प्रश्न विवादास्पद है और इसको लेकर कोई भी इतिहासकार एकमत नहीं है। इस संबंध में भिन्न-भिन्न विद्वानों ने अपना मत दिया और इसी मत के कारण यह प्रश्न इतना भी वादा ग्रस्त हो गया कि निश्चित रूप से इसके संबंध में कोई मत देना असंभव सा लगता है।राजपूत शब्द की सर्वप्रथम उत्पत्ति **6 वीं शताब्दी ईस्वी** में हुई थी। राजपूतों ने 6ठी शताब्दी ईस्वी से 12वीं सदी के बीच भारतीय इतिहास में एक प्रमुख स्थान प्राप्त किया था।
राजपूतों की उत्पत्ति के सन्दर्भ में विद्वानों ने कई सिद्धांत का उल्लेख किया हैं. **श्री कर्नल जेम्स द्वारा** दिए गए सिद्धांत के अनुसार राजपूतों की उत्पत्ति विदेशी मूल की थी।उनके अनुसार राजपूत कुषाण,शक और हूणों के वंशज थे. उनके अनुसार चूकि राजपूत अग्नि की पूजा किया करते थे और यही कार्य कुषाण और शक भी करते थे।इसी कारण से उनकी उत्पति शको और कुषाणों से लगायी जाती थी।
इसी तरह दूसरे सिद्धांत के अनुसार राजपूतों को किसी भी विदेशी मूल से सम्बंधित नहीं किया जाता है. बल्कि उन्हें क्षत्रिय जाति से सम्बंधित किया जाता है। इस सन्दर्भ में यह कहा जाता है की चूकि उनके द्वारा अग्नि की पूजा की जाती थी जोकि आर्यों के द्वारा भी सम्पादित किया जाता था।अतः राजपूतों की उत्पत्ति भारतीय मूल की थी।

तीसरे सिद्धांत के अनुसार राजपूत आर्य और विदेशी दोनों के वंशज थे. उनके अन्दर दोनों ही जातियों का मिश्रण सम्मिलित था।

चौथा सिद्धांत **अग्निकुल सिद्धांत** से संबंधित है. **चंदवरदायी** द्वारा १२वीं शताब्दी के अन्त में रचित ग्रन्थ 'पृथ्वीराज रासो' में चालुक्य (सोलंकी), प्रतिहार, चहमान तथा परमार राजपूतों की उत्पत्ति आबू पर्वत के अग्निकुण्ड से बतलाई है, किन्तु इसी ग्रन्थ में एक अन्य स्थल पर इन्हीं राजपूतों को यादव वंशी" कहा है। मानने वाले राजपूतों की उत्पत्ति अग्निकुंड से उत्पन्न

बताते हैं। यह अनुश्रुति पृथ्वी राज़ रासो चंद्रबरदाई कृत के वर्णन पर आधारित है। चंदबरदाई लिखते हैं कि परशुराम के द्वारा सम्पूर्ण क्षत्रियों विनाश के बाद ब्राह्मणों ने आबू पर्वत पर यज्ञ की अग्नि से , चौहान परमार सोलंकी व राजपूत वंश उत्पन्न हुए। पृथ्वीराजरासो के अतिरिक्त 'नवसाहसांक' चरित, 'हम्मीररासो', 'वंश भास्कर' एवं 'सिसाणा' अभिलेख में भी इस अनुश्रति का वर्णन मिलता है। कथा का संक्षिप्त रूप इस प्रकार है- 'जब पृथ्वी दैत्यों के आतंक से आक्रान्त हो गयी, तब महर्षि वशिष्ठ ने दैत्यों के विनाश के लिए आबू पर्वत पर एक अग्निकुण्ड का निर्माण कर यज्ञ किया। इस यज्ञ की अग्नि से चार योद्धाओं- प्रतिहार, परमार,चौहान,चालुक्य की उत्पत्ति हुई। भारत में अन्य राजपूत वंश इन्हीं की सन्तान हैं।
विदेशी उत्पत्ति के समर्थकों में महत्त्वपूर्ण स्थान ककर्नल जेम्स टॉड का है। इनके अनुसार राजपूत वह विदेशी जातियाँ है जिन्होंने भारत पर आक्रमण किया था। अग्निवंशी को हूण को क्षत्रिय का दर्जा देने के लिए गढ़ा गया था वे राजपूतों को विदेशी सीथियन जाति की सन्तान मानते हैं।कुछ इतिहासकार विदेशियों के हिंदू समाज में विलय हेतु यज्ञ द्वारा शुद्धिकरण की पारम्परिक घटना के रूप मे देखते हैं। तर्क के समर्थन में टॉड ने दोनों जातियों (राजपूत एवं सीथियन) की सामाजिक एवं धार्मिक स्थिति की समानता की बात कही है। उनके अनुसार दोनों में रहन-सहन, वेश-भूषा की समानता, मांसाहार का प्रचलन, रथ के द्वारा युद्ध को संचालित करना, याज्ञिक अनुष्ठानों का प्रचलन, अस्त्र-शस्त्र की पूजा का प्रचलन आदि से यह प्रतीत होता है कि राजपूत सीथियन के ही वंशज थे।
इन तमाम विद्वानों के तर्को के आधार पर निष्कर्षतः यह कहा जा सकता है कि राजपूतों की उत्पत्ति के सिद्धांतों के आधार पर अभी तक इतिहासकारों के बीच एक विवादास्पद प्रश्न है और इस प्रश्न को जितना लंबा वर्णन किया जाए उतना उलझता जाएगा अतः वह विदेशी थे या क्षत्रिय या और यह एक प्रश्न अपने आप में उलझा हुआ है।